।। श्री श्रीगौरहरिर्जयति ।।

❋ रसिक जीवनि ❋

भक्तमाल टीकाकार श्री प्रियादास जी के गुरु–

कविवर

श्री मनोहर दास जी द्वारा संकलित

Vrindavan Das Govind Kund Vrindavan

प्रकाशक :—

कृष्णदास बाबा

ग्वालियर मन्दिर, कुसुम सरोवर, राधाकुण्ड (मथुरा)

[श्री राधाष्टमी, सम्वत् २०१६]

भज—निताइ गौर राधेश्याम ।

जप—हरे कृष्ण हरे राम ॥

रसिक जीवनि

॥ राग कमोद ॥

जय श्री महाप्रभु चैतन्य ।
कलि अवतार रसिक मन मोहन किये सकल जीव जगधन्य ॥
दुर्लभ प्रेम दान विस्तारचो सुन्यों न देख्यो काहूँ अन्य ।
विविध भक्त रस पीवत जीवत ज्यों चकोर शशि रूप अनन्य ॥
अदभुत रहनि कहनि सोभा जुत रूप सनातन प्रीत मगन्य ।
प्रगट कियो ब्रज श्री वृंदाबन जो पहले होतो अति धन्य ॥१॥

सुमिरों श्रीजुत रूप सनातन ।
कियो प्रकास बृज श्री वृंदावन युगल स्वरूप उपासन ।
विविध भांति रस रीति दिखाई प्रीत कृष्ण राधागन ॥
जिन विन सब कविजन कविताई होती व्यर्थ पुरातन ॥
रसिक भक्त जीवन दोऊ प्रगटे फूले अंग समातन ।
चरण सरण मन हरण महाप्रिय गुण अपार कहे जात न ॥२॥

वंदे श्री वृंदावन धाम ।
ब्रह्मादिक दुर्लभ तृन तन हूँ हेत तुच्छ जीव विश्राम ॥
उद्धव से हरि प्रीतम चाहति गुल्म जनम लग्यो अभिराम ।
वलि वलि जांव कृपानिधि मोकों लाड लड़ावति आठों जाम ॥
यहै रीति रानी श्री राधा नहिं विचारति रूप गुन नाम ।
पाइन लाल भाल दई वेंदी मोउर प्रिय लखि रीझति श्याम ॥३॥

प्रनऊं वे श्री रसिक अनन्य ।
जिनके जुगल किशोर हृदै में सुपन न कवहूँ आवति अन्य ॥
वसत निरंतर तजति न पल छिन प्रान सजीवन वृंदारण्य ।
गावति सुनत चरित्रनि मोहन मानत सुख यों रूप अभिन्न ॥४॥

अथ श्री लाड़लीजू के वचन सखी प्रति ।। राग ईमन ।।

कटि पीत पिछोरा बांधे फेटा ठांढो खरिक मुख भुज तरे कंचन लकुट धरें। अलकनि मेलि अेंठ वा फेंटा बांध्योरी रचि छैल छबीले वनमाला लहलहात गरे।। अंग अंग माधुरी विलोकति कोटिक मनमथ पाय परें। वात कहत हित अनूप सखा सों हंसि लसि दशनन फूल झरें। ५।।

मेरौ मुख चितै चितै ज्यों रहै हौं हो सवनि में लाजनि भी ज्यौं। अैसौ हठीलो नेकुहू न टरई जे तो हौं सैन निखि ज्यों।। बातें औरन सों करें टकटकी मो तन त्यो त्योंरी समारि नारि तन मन छीज्यों। नेह हू कौ डर मोहि पवित्र के प्रभु जकिरही चित्र पुतरी ज्यों ।।६।।

मुरली बजाई भो धाम नियरें श्याम नीके सुरन। विकट ताननि और सप्त सुरनि अनहद भेदनि कहि न आवै मो रसन।। श्रवन सुनत रही चकृत अचेत हौं लोकलाज कित गुरूजन। सुघर राय मोहन की वंशी धुनि मन घूमति झांई गूजति बन बन ।।७।।

वचन श्री लड़िलीजू के–

मानौ और की बात दसा अपनी ऐसी कीनी वंशी के वस मोहन गोहन लागी लागी डोलें। जो कवहूं गृह द्वार न झांकत भ्रमत भूली मृगी लों घूघट हूं नहिं खोलें।। ना कुल कान करें न डरे सबही सों न वौलें। सुघर राय के प्रभु को सुख निरखत बिकानीरी विन मोलें ।।८।।

अथ सखी वचन लाडिलीजू सों—

तू सुनि कानि दै री मुरली धुनि तेरे गुन गावें श्याम कुंज भवन। सनमुख ह्वै करि ताही को आकों भरत तेरे तन परस आवें जो पवन।। तेरोई ध्यान धरत उर अंतर नैंन मूदि तेरोई

आगम धुनि सुनि श्रवन। सूरदास मदन मोहन सों तू चलि मिलि री, तो ही तें पायो नाम राधारवन ॥६॥

प्यारीजू के वचन ॥ राग हमीर ॥

कांह हैरी प्रान हे सखी आन ध्यान नाहिन मैंरे मनके हरन सुख के करन। अटपटी पचरंग पाग ढरकि रही अग्रभाग कुंकुम को तिलक भाल नैन कमल श्याम वरन ॥ भ्रकुटी कुटिल अलक लोल रतन जटित कुंडल डोल मानो शशि प्रकट भयो उदौ कियें जुगल रतन। प्रभु कल्याण गिरिधर की छवि निरखि मगन भई मोहि लई उनही माई मुरली मधुर अधर धरन ॥१०॥

सबके नैन प्राण कान्ह में न मूरति तन अटके। तजित लोक लाज श्याम नाम मैरे धर्म्म और अधर्म्म रो जानि प्रतीत चित्त सों लटके ॥ रूप रस सब छके रसिक ये कापै परत अव हटके। जानि परी सखी लाल गोपाल जू है इनहीं के वटके ॥११॥

निपट बड़भागी मेरी अँखियां। श्याम सुन्दर सुजान मन मोहन ताकें रूप अनुरागी ॥ वस कीन्हौं बहु नायक प्रीतम ऐसी बारस पागीं। भई निछाबर हौं इन पर अति छवि पीवत पलत्यागी ॥१२॥

राग शुद्ध कल्याण ॥ अथ मान वर्णन ॥

मुरली बजावति गावति छबि आबली समझि चंद्रावली मान मन आयो। जानि लियो अलि अति व्याकुल ह्वै नाना विध रचि वचन सुनायो ॥ जद्यपि चतुर सिरोमनि प्यारी पै चित सरस भुराई छायो। सव भांतिन वह भाव मनोहर हित सागर को भोर दिखायो ॥१३॥

मान न करिये नंदलाल नवल निसिदिन तेरे ही रस बस। जिनही नेंकु निरखि पिय प्रवीन ते सुखपाई मुरझाय रही तू क्यों

कठोरि जिहि किये संग रंग रहसि ।। ज्यौं ज्यौं तू उन मन न मिलावति री लाल सों त्यों त्यों उन उन गति पति यह आनंद री तू समझि बिन पीय के तन परस । श्याम सुंदर पीय के अंग अंग तूंही विराजी याते रूप रेख जोवन सरस ।।१४।।

जो तू आखें मिलियो चाहै गोविंद सौ तो तू काहे को रूसति है सुनारि । जगजीवन प्राणनाथ प्राणनि के तासों वरी अवरी हवनि वारि ।। हो प्रवीन हित लीन महामृदु सुधि कीजै गुण गण अपार । रसिक बिहारीजू सेज सवांरी मग अवलोकति चलि वलि मिलिकरि राखें हार ।।१५।।

सुख देनीरी कोलों रहि हैं गुमान भरी अरी वेगि तू उन सनमुख क्यों न जाति । वे तौ तेरी आरति करत है री नंद कै नंदन मोहन गोपाल अब त्यों त्यों तू सतराति ।। हौ आई पन करि सुन राधे कीजै कृपा अलि हा हा खाति । सफल मनोरथ हौंहि रसिक हरि मिलि विलसो यह रस में राति ।।१६।।

हौं मनावनि आईरी तूं बोलत काहे न देखति है करि नैंन सतर । असे तो दिन चार रूप गुन योवन की सब भइरी तर ऊतर ऊतर तर देत कतर ।। वे मन हरण करन गुण प्रीतम वसे हिये रस रूप अतर । भये व्याकुल अब हठतजि राधे बहुत भई कछु सुनेंगी न तर ।।१७।।

।। राग भूपाली ।।

मोहन रूप सरूपी तेरे नैना बैंना पिय मन भावति । जबही देखियत तब ही नीके लागति सेत असेत कटाक्षनि ओर जग मनउठि धावति ।। वे रस हीन मीन खंजन कमल जे कहियत है ये रसिहिलि मिलि कोटि भाय सुभाय उपजावत । श्याम सुंदर बहु नायक री 'ताही को भाग तासों हित चित कर मन लावत ।।१८।।

लै आई है हो हमकौं वतियां बहुत सुहावती। ऐसी अटपटी सुनावति है अब वोरानी किधौं माती॥ ऐसी लंगर मेरे वगैर टगर टगर देखति अति इतराती। तानिसैंन के प्रभु वे वहु नायक होय बीच तें हांती ॥१९॥

(राग सोरठा)

श्री राधे रूप अद्‌भुत रीति॥
सहजजे प्रतिकूल तो तन रहे छाड़ि अनीति॥
कचनि रचना राहु ढिगही मुदित वदन मयंक।
तिलक वान कमान भुंवछत नैन हरन निसंक॥
रतन जतननि जटित जुगतारंक रवि छवि छाज।
तदपि दूनी जोति मोतिन मंडली उड़राज॥
अधर सधर सुपक विंवो सुभग दशन अनार।
धीर धरि रही कीर नासा करत नहीं सचांर॥
नील पट तम जोन्ह तन छवि संगरंग रसाल।
कोक जुगल उरोज परसत नहीं भुजा मृणाल॥
निकट करि के हरि पै गजएति क मैंटी जात।
प्रकट गजगति जहां जंघा कदली रूचि हुलसात॥
गदाधर वलि जाय वूझत लगहि है जिय त्रास।
इति संपति सहति क्यों पिय पूतरिन में वास॥२०॥

मोहन वदन की शोभा।
जाहि निरखत उठत मन आनंदको गोभा॥
भौंह सौहन कहा कहौं छवि भाल कुंकुम विन्दु।
श्याम वादर रेख पर मनो अवहि ऊग्यो इंदु॥
नैन धीर अधीर कछु कछु असित सित राते।
प्रिया आनन चद्रिका मधुयान रसमाते॥

वंसिका कल हंसिका मुख कमल रस रांची।
पवन परसत अलक अलिकुल कलह सी मांची॥
ललित लोल कपोल कुंडल मधुर मकराकार।
जुगल सिसु सौदामिनी मनो नवति नट चटसार॥
विमज सजल सुढ़ार मुक्ता नासिका दीनों
उच्च आसन पर असर गुरू उदोसो कीनो॥
रह्यो मन ललचाय तासों टरत नहीं टारयो।
अमित अद्भुत माधुरी पै गदाधर वारयो॥२१॥

भई भली आयु ही आये मोहनलाल रसाल।
कहिलें हों हित चित की बातें है मति परम विशाल॥
सुनि तुम रीझ भीजि ही जैहौ मन मृदु निपट दयाल।
रूप मनोहर नैन भावतों व्याकुल विरह विहाल॥२२॥

अथ—"वदसि यदि किंचिदपि दंत रूचिकौमुदी हरति दरति घोरं" ॥२३॥ यह अष्टपदी गेयं

पद

चलो लाल तुम मान मनायो होंलें आऊ सेज सवांरो।
विविध कुसुम कोमल करि पल्लव वीन वीन कोऊ पलटारौ॥
हो प्रवीन अति रसिक शिरोमणि पुन अति रचना में मन धारौं।
आई ही जानों प्यारी जी कुंज मनोहर पंथ निहारो॥२४॥

पूंजो और धन जोरहि है धन मेरे तो प्यारे की प्रीति पूंजी।
तन मंजूष धरि राखौ ज्ञान तारोंदै और तीप की न लागै दीठि कूंजी
पल पल छिन छिन रहौं सभारत नैंन निहारति राखौं जोजी।
रसिक विहारी वे बहु नायक उनकी वे जानें हौं तो वाही सोंजी॥२५

मान छुटिवो

अपनी ओर देखि प्राण प्यारो छाड़िये मानजू विनती मेरी।
महा विकल मन मोहन सोहन भई आजु विन दामन वेरी ॥
सुनत श्रवन चितई पा गई रिसह्वै प्रसन्न बोली सुनियेरी।
रसिक सिरोमनि प्राननि प्यारो को वह मन जिहि हों गहिघेरी ॥२६॥

अथ—"निभृत निकुंज गृहं गति पा निसि रहसि निलीयवसंत" ॥२७॥ यह अष्टपदी गेयं

अथ--"रति सुख सारे गतमभिसारे मदनमनोहर-वेशं" ॥२८॥ यह अष्टपदी गेयं

❀ राग कान्हरो ❀

अभिसार शुक्ला कृष्ण जैसी समैतैसौ गान:—

एहो राधा प्रान प्यारी पहरि नील सारी निसि प्रतिकारी तासौ होड परै। किपट गुराई तन ढांयो मृगमद लैकै यह अंधियारी ताके मदहि हरै। एते पर अंग भिलमिलान जोपै जानि जैहै प्रवल सुगन्ध भौंर भीर अरै। सखीन सिखाई श्यामा चली धीरज बांध मिलन मनोहर रसिक वरै ॥२६॥

एहो गोरी राधा प्यारी पहरें सेत सारी जुन्हैया तोहि अति होड़ि परी तैसे ही सुमन आभूषन न पहरें और मुक्ता किरन मिलि छवि पसरी ॥ तैसो पै यमुना तरङ्ग कांति छवि भिलमिलात चकचौंधी सी लगति एक रसना मोपे कहीं न आवति नरी ॥ जगन्नाथ कविराय के प्रभु फूले फूलनि की सज्जा रचीं चली एकरी ए रसरंगररी ॥३०॥

❀ राग विहागरो ❀

अंग दुरायें चलि संग मेरें। गहि मुख मौन अधर ओट दै दशन दामिनी दमकत तेरें तजि नुपुर कटि छुद्र घंटिका नाद सुनत खग मृग घेरें॥ कुंमनदास स्वामिनी वेगि चलि निपट निकट गिरिधर तेरें ॥३१॥

❀ राग विहागरो ❀

प्यारी पग हरें हरें धरि। जैसे खरे नूपुर न वाजें। जागत ब्रज को लोग नाहि ने सुनिवें जोग। हा हा रो हठीली नेंकु मैरो कह्यो करि॥ जब लगि वन वीथिन जांहि सघन द्रुमन की छाहि तव लगि मुख ढापिलै भावती सुन्दरी॥ रघुनन्दन प्रभु प्यारी आगे तैं न हजै न्यारी। सरद उजियारी मांझ जै है कहूं ररि ॥३२॥

श्यामा प्यारी आगे चलि आगे गहवर वन भीतर जहां बोलें कोयल री। अति ही विचित्र पुष्प पत्रनि की सज्या रची रूचिर सवांरी तहाँ तुव सोइलरी। घरी घरी पल पल तेरी ही कहानी तू व मग भोईलरी। श्री हरिदास के स्वामी श्यामा कुंज-बिहारी काम रस भोइलरी ॥३३॥

एक पद संस्कृत राग कान्रो।

"कलयति नयनं दिसि दिसि वलितं।
पंकज मिव मृदु मारुत चलितं॥
केलि विपिनं प्रविशति राधा।
प्रतिपद समुदित मनसिजबाधा॥

ध्रुव पदं

विनिदधति मृदु मंथर पादं। रचियति कुंजर गति मनुवादं॥
सुखय तुरङ्ग गजाधिय मुदितं। रामानन्द रायकविगदितं ॥३४॥

मधुर मधुर चलति आजु कीरति नंदिनी। लोचन अलि ललित पलक मंद मंद हलत, अलक सुंदर मुख कांति कमल चंद निंदनी॥ सौरभ भरि भरति देसन वहत करि वेस रूप पहेरि भ्रमर नारि चरत सुवन-वंदिनो। दामिन तन ज़लद वतन वरखत रस मुखर रसन वल्लभ मन नैंन करति ताप कंदनी॥३५॥

चली निसि पिय पै लाड गहेली। ~ विनती कीनी जव सहचरि तव अरत जो नवेली॥ मंद मंद पग धरत धरनि पै जदपि हिये तलवेली। चाह लाज दोऊ झकझोरति अति व्याकुल अलवेली॥ निपट निकट संकेत जानिकै खिजत सखि सौं गर भुज मेली त्तै मनोहर नूपुर धुनि सुनि आनि गली छवि झेली॥३६॥

॥ राग नाइकी॥

तू मोहि कित ल्याईरी यह गली। जोई जिय डरपत सोई भई मैंरी अली आगें मोहन ढाढे अव कैसें जैवो मैंरी माई। रसन दशन धरि करसौं कर मीड़त सखि सौं खिजत आनंद उर न समाई। गोविंद प्रभु की तिहारी हिली मिली बातें हौंनी कैं जानति भलो कोनी भले नग सों भेट कराई॥३७॥

॥ राग कान्हरो॥

मिलत भुज भरि लई श्याम श्यामा प्यारी कौं अति आदर सौं। कुसमित सेज बैठाई चिवुक गहि मृदु मृदु बचन कहैं सुखकारी॥ चरण प्रछाल पौंछि पटपीत सौं नैंननि लाय सुकृत मानत धन नछत्र सुफल विधनारी। नंददास प्रभु प्यारी पियकी अधीन ताई देखत विवस ह्वै तन सुधि विसारी॥३८॥

प्यारी अबकी हूं किहैं आई है। इत तुम अधिक श्रमति मन मोहन में कोटि जतन समुझाई है॥ उत हठ कतई बहुत नव नागर तेंसी नई ठकुराई है। श्री हरिदास के स्वामी श्यामा

Vrindavan Da... Govind Kund Vrindavan, N...

कुंजविहारी कर जोरि मीत ह्वै दूवरे की राधी खीर कहौं कौन खाई है ॥३६॥

॥ बैठक ॥

बैठे सेज रसिक नद नंदन संग वृषभानु दुलारी। अद्भुत गति कुल सील किशोरी वरनत कविमति हारी ॥ वह घनश्याम भयो चातृक इत घिरी लाज वजमारी। कहै चाह अवलोकि वदन तन दुर्लभ लाल विहारी ॥ कीजै कह्यो कौंन कौ दोऊ घटवढ़ि लागति प्यारी। तरसत नैंन मनोहर प्रीतम पहली पग परटारी। पहली लाज कौन भांति टारी ॥४०॥

॥ कवित्त ॥

मेरी कुल पूजि तुहीं मानी ठकुरानी करि तोही नित आंखिन में हिय में धरति हों। तेरे ई संतोष हेत दछिन रसीले गुन मानि मानि आलिन की सीख निद रति हौं ॥ आनि वन्यौं जोग अब मैंरे वड़भागिन तें ताही ते अधीनता लै दीनता करति हौं। देखनि दै नैकु प्रान प्रीतम मुखारबिंद हाहा लाज आजु तेरे पाइन परति हौं ॥४१॥

बैठे रसिक सिरोमनि सज्या परम रसिकनी प्यारी।
मन मैं मन तन तन संमति अनैन नैंन मनुहारी ॥
कौन अनूपम समें परस्पर बतरस झर लाग्यो जिय ज्यारी।
रीझ रीझ उर मिलनि मनोहर मिलन रंग दृग रूप खुमारी॥४२॥

नवल विहारी विहारिन दोऊ शोभित सेज तन फूल सिंगारें।
अंग अंग पर डोलत दृग यों छबि, अलवेल। गेंद उछालें ॥
मच्यो खेल चखकंदुक अद्भुत इत उत टरन न देत संभारें।
देख्यों कभू न मनोहर सहचरि होति निहाल सुख्याल निहारें ॥४३

अरी तेरी अखियां कजरारी। पिय मनको मोहनी झपकारी वरूनी अति चंचल पानिय सहज ठरारी ॥ हरि हिय हारी

छवि मतवारी प्रेम पगी अनियारी । चितवनि हसति मुरति रूखी ह्वै सब विधि लागति प्यारी ॥४४॥

॥ कवित्त ॥

ढरी रस बातनि छबीली रंग भरी प्यारी,
लाल अधरनि में नचनि लागी दामिनी ।
खुली दशनावलि मरीचिका झरति फूल,
छुटि अलिकावली प्रफुल जोन्ह जामिनी॥
वेंन धुनि वेंनी कोर राग रंग रेंनी भांति,
जात न वखानि चोज पुंज अभिरामिनी ।
लें लै हाथ हाथ बतराति हसि मुरजाति सोहै,
उलरानि सों सिहानीं भीनि भामिनी ॥४५॥

कोंवर कुंवरि सुख सेज के विलास हास,
ज्यों ज्यों भीजें रैंनि त्यों त्यों रस भीजें जाति हैं ।
आये है हुलसि अरूनाई झलकनि लागी,
उमगे परति गात गातनि समात हैं ॥
मन लीने हाथ मनुहार लीने नेंननि में,
लालच लपेटे हिय जिय ललचात है ।
बेंनी दोऊ अंक भरें दोऊ अंग अंग ढरें,
दोऊ नाहीं नाहीं करें दोऊ हाहा खात है ॥४६॥

आज विराजति रास रसिक वर गावति प्यारी संग । भौंहनि के भाय होत दृगनि गुरूताई नासिका उचनिदति लचकनि अंग अंगनि की को वरन रस रंग ॥ देत तार चमकति मुदरनि के नग अंकुरिन सौं कुंचित अलक सवांरति रू रुकति माल जैसे उरज उतंग । सदानंद प्रभु को सुख नीकें लहै जब रोम रोम श्रवनति वैन तो सुख होत अभंग ॥४७॥

॥ राग विहागरो ॥

चंद्रिका सवारि राखो पिय के सीस पर पिय सीस फूल पट फूल धरयो। गौर श्याम अति सरूप कही न परति छवि अनूप दुहुन को वदन परस्पर रंग भरयो ॥ चितवनि रति रस वरखत मुसिकानि मन हरखत अंग प्रेम काम केलि वेलि वरयो। राम राय प्रभु प्यारी मिले कुंज सुखकारी भगवान सखी दरस अमल परयो ॥४८॥

सेज विराजत कमल नैंन हरि ढिग श्यामा मृगनैनी। अंग अंग उझलि गौर सांवल छवि दृग रस प्यासनि कौं सुख दैनी ॥ दोऊ चंद चकोर कंज अलि नव नव चाह वढति अति पैंनी। कौंन मनोहर विनय माधुरी कौन स्वाद नाही पिक वेंनी ॥४६॥

॥ राग कान्हरो ॥

श्यामा नागरि निकुंज अंत किसलय दल रचित सेंन कोक कला कुसल कुंवरि अति उदार री। सुरत रंग अंग अंग हाव भाव भ्रकुटी भंग माधुरी तरंग मथित कोटि मार री ॥ मुखर नूपुरनि सुभाव किंकिणी विचित्र राव विरमि विरमि नाथ वदतं वर विहार री। लाड़िली किशोर राज हंस हसिनी समाज सोचति हरिवंस नैंन सुरत सार री ॥५०॥

श्याम सखी की टहल करत तातें श्याम सखी यह अर्थ श्याम सखी गोरी की गुहति वेंनी चाडसौं। जानि जुगल मधि सधि बैठी पै अनंग चुगल अंगनि चौंकी सी भोंहें अंठ अनखाति लाड़सौ ॥ अति अनूपम कोमल कपोल लगि विरमि विरमि कर रहत स्वाद जाडसौं। छुवति ही भुज मूलनि फूलनि अति विहसति ज्यों ज्यों जीय जमि बैठति मदन माउसौं ॥ राखी अंठ उरोजनि ऊपर पीठ मोड़ि नीठि नीठि भुज ग्रीवा ह्वै कर निकसत नहीं

चिवुक गाढ़सौं । दर्पन लखि रिझिवार रीझि देत मनमानी रस-सानी जानी बल्लभरसिक सखो लखें प्रेम आडसौं ॥५१॥

पोढ़े दोऊ मोहन कुंज किशोर । हरि राधिका ग्रीवा भुज दीने वदन चंद्रमा नैंन चकोर ॥ पलक न परत मुंदी पलकनि लखि कौन माधुरी और न ठौर । छके मनोहर एक देस मुख अंग अंग रूप समुद्र हिलोर ॥५२॥

॥ राग बिहागरो ॥

सांवरे की सुन्दर सुख रासि भुजा दिये सीस सोई श्यामा कुसुम सेज सुखद कुंज महल में । पिय के हिय प्रेम ललकि वदन देखि लगें न पलक कमल नैंन रीझि रहे रूप चहल पहल में ॥ गौर श्याम सुभग कांति अरूझत तन अनूप भांति प्रीतम रस रंग प्रिया प्रथम संग दहल में । राम राय प्रभु प्यारी भए परस्पर हितकारी भगवान सखी सुखारी दुहुनि की रस टहल में ॥५३॥

पोढ़े पिय प्यारी सखी अनेी लखि न्यारी भई गई एक किंकरी पलोटति सुपाइ है । यद्यपि है सोए रस भोये मन मोए दोऊ तऊ सुख होत कोऊ अद्भुत सुभाई है ॥ अति रीझ वारनि पै रीझन पचति सरी परी खुलि पायजेब मानों यहे भाई है । चरन उदार पूछताछी को विचारि तज्यो भयोई सिंगार याको फूली न अंग न समाई है ॥५४॥

पौढ़े सेज सोंहें मन मोहें सब आलिन के जो हैं झप कोहैं नैंन नीद मतवारे है । मुदित पुलक लखि लागत पलक नाहिं जागति सुछवि दोऊ सोवति निहारे हैं ॥ अलग कपोलनि पै जागें रस पागें संग कुंडल झलक देखि प्रान वारि डारे हैं । चाइन सौं दासी कर पाईन पलोटत ही कर ही पलोटे पाय ऐसे लागे प्यारे हैं ॥५५॥

सीत रस भोये प्रीतमा रंग में समोये अंग अंग मिली गोये एसे सोये पट तानिकै। लखि अलिसैंनी कछु कीनी सैंनी वेंनी नैन न्हात ही त्रिवेनी है भई ओर जानिकै ॥ कोऊ रति दासी दोऊ ललित विलासी देखि रहो पाटी तरफिर सेवा सुख दानिकै। पाये कोटि गुन पुन लोभ लगि दानदेत लेत अनगिन दिन छौड़ै नस-पानकै ॥५६॥

॥ राग भेंरों ॥

जय जय राधा माधव दयिते। गौकुलतरुणीमंडलमहिते ॥ दामोदररतिवर्द्धनवेसे। हरिणीसंकुटवृन्दावनेशे ॥

॥ ध्रुव पद ॥

वृषभानोदधिनवससिरेखे। ललिता सखि गुन रमत विशाखे ॥ करुणां कुरुमयि करूणा भरिते। सनक सनाहन वर्णित वरिते॥५७॥

जय जय वल्लभराजकुमारं। राधा वक्षिसि हरिमन् सिहार। अप घनघटितघुसृनुघनसार। पिछ खचितकुंचित कुचभार॥ राधा वृत हरि मुरली तार। नयन चलि कृत मदन विकार॥ रस रंजित राधा परिवार। कलित सनातन चित्त विहार ॥५८॥

राजति श्याम श्यामा निसि रंग रंगे। सुभग रति चिन्ह झल मलत वपु चित्र मानो चित्र जिय करत दोभा अभगे ॥ दोऊ आलस भरे सोए मृदु सेज पर नवल नंदलाल औ नव किशोरी। मानो घन दामिनी रस वरस श्रमित ह्वै कियो विश्राम मति रंग वोरी ॥ दियें भुज ग्रीव सुख सीव सावल गौर महा कलरूप दृगनहिं निहारो। परस्पर अंग प्रतिविम्ब लखि भ्रम यहै कौंन प्यारी कौंन लाल प्यारो ॥ फैल रही अलक कपोलन पै सोहनी मोहनी एक उपमा विचारी। नैन खग जाल कौ जाल रसाल यह फसनि जामें लगे निपट प्यारी ॥ अधर मुसिक्यानि रसखानि

सूचित हियें चोप सरसानि तन गाढ़ि भेदे। मनो वह प्रेम अद्भुत औसर पाइ दुरयो उर निकसि छवि सो लपेटे ॥ वसन भूपन उरभि उरभि मन माधुरी रात औंर प्रात की सुधि विसारी। कुंजनि तवसें हि तर से निज टहल में सावधानी चित्त सू वासारी ॥ चहुं दिशि ललित अलि प्राय रंध्रनि लगीं मनिन के महल जहां प्राण प्यारे। निरखि मन हरन चख भरनि शोभा विविध टर नपल थकित ह्वै रहे तारे ॥५८॥

॥ राग राग कली ॥

अवहो नैक सोए हैं अरसाय।
काम केलि अनुराग रंग भरे जागति रेंन विहाय ॥
वार वार सपने हू सूचित झरत रंग के भाय।
यह सुख निरखि सखी जन प्रमुदित नागरीदास वलिजाय ॥५६॥

आजु सखी अद्भुत भांति निहारि।
प्रेम सुदृढ़ की गृंथ पर गई गौर श्याम भुज चारि ॥
अवही प्रात पलक लागी है मुखपर श्रम कन वारि।
नागरीदास रस पीवों निकट ह्वै अपने वचन विचारि ॥६०॥

उरझयो नीलाम्बर पीताम्बर महिया। कुंडल सों लरलट वेसर सों पीतपट हार हु में बनमाला वहियामें वहियां ॥ हंस गति अति छवि अंग अंग रही फवि उपमा विलोकी सब कहवे कौं नहियां। काम के किलोल छूटे सेजहू के सुख लूटे सूर प्रभु विलसत कदम्ब ही की छहिया ॥६१॥

रसिक सों बातें लाड़ लड़ोही।
हसि हसि जाति समाति हिये में फिर चितवति पिय सोंही ॥
करत विहार उदार सकल अंग प्रेम विवश ललचोंही।
भगवंत मुदित लड़ावति छिन छिन छैल दसा गहि गोंही ॥६२॥

रसिकनी रस में रहत गडी ।
कनक वेलि वृषभानु नंदिनी श्याम तमाल अड़ी ॥
विहरत श्री गिरिधरन लाल संग कौने भांति पड़ो ।
चतुरभुज दास निरखि दम्पति सुख अति रस केलि बढ़ी ॥६३॥

जगायरी भई वेर वड़ो । अलवेली खेलो पिय के संग अलक लड़े के लाड़लडी ॥ तरन किरनि रन्धन ह्वै आई लगी निबाई जानि सुक खरन व ह्रोंहो ह्वै रहो अड़ो । विहारिन दास छवि को कविवर ने जी छवि मोमन माझि गड़ी ॥६४॥

॥ राग विभास ॥

प्रवीन वीन वजावति गाढ़ी छवि सों भुरदरें उठी । ललित राग अनुराग ललित गति ललित तानि विघानि ललिता ललित गुन प्राढ़ी ॥ लाड़िलोलाल भवन मैं पौढ़े तिनही सुनावति जगावति प्रात प्रीत गाढ़ी । नंददास प्रभु प्यारी को शोभा देखत अति उत्कण्ठा वाढ़ी ॥६५॥

प्रात समैं नव कुंज द्वार ह्वै ललिता ललित वजाई वीना । पौढ़े सुनति स्याम श्री श्यामा दंपति चतुर प्रवीन प्रवीना ॥ अति अनुराग सुहाग परस्पर कोक कला निपुण नवीन नवीना । विहारिन दास वाल वलि वंदस पर मुदित प्रान नोछावर कीना ॥६६॥

राग रंगीली ललिता सहचरी वीन बजावति जानि कैं प्रात । सुनत विहारी विहारिन दोऊ खुलित न द्दग अंग अंग लपटाति ॥ताननि रसताननि पटहूपर माननि रैंनि मिल्योइ सुहाति । आलि रीझि भीजि अति विथकित कौन कहै जगवे की बात ॥६७॥

॥ कवित्त ॥

जागै न जगाए उर लाए सुख पांए सोवें एक वैस एक रस जोवन की दाई है। लयो है अंग अंग छवि सों छवीले

छैल रंग में रंगीली भुजा कंठनि में नाई है। भूषण वसन वागे सोंधे चरचाये चुने अपनी अपनी सों जि साखी अलि सबल्याई है कृष्मावति अलि कहैं लाल नैना खोलि देख्यो तृसरेनु भूमिकै झरोखनि में आई है ॥६८॥

जगावति ललित झरोखनि लागी। गावति मधुर विभास सुनावति सहचरि अति रस पागी ॥ पिय प्यारी सोवत कवू जागति मानि रैंन अखिया अनुरागी। अदभुत गति अलि पल नहीं लागति सोवन जागनि जागी ॥६९॥

उठे दोऊ भोर रससे नैंन। अंग अरसो हें मृदुमुसिको है अति उरझो हैं वैंन ॥ निरखि परस्पर रति चिहन छवि पुनि विलास रंग दैंन। रसिक ब्रिहारी रसिकनी प्यारी सींचत अलिदृग वेंन ॥७०॥

जागे लोचन घूम घुमारे। रूप रसासव पियत हू प्यासे अति अदभुत मतवारे। सूचित रैंन चैंन वेंन विनु दैंन रंग छवि सींव सिंगारे। चतुर विहारी विहरिन दोऊ ललितादिक दृग तारे ॥७१॥

❀ कवित्त ❀

प्रात पर्यंक उठति दोऊ नीठ नीठ पीठ पर वूटि परे गुहे कचवेनी में। अंडि अंगुरानी औ जंभानी जब सुखदानी स्वासनि, सुगन्ध दौरि परि अलि श्रेणी में ॥ रजनी चिहन चाहि चौंपनि उमगि हिये हिले मिले जाति न्हाति नवल त्रिवेनी में। नींद रंग भरी आँखें खुली पुनि मुदिजाति मुदि जाति मन मानों वारेयो पट्रैंनी में ॥७२॥

रैंनि रसमसे अंग अंगनि में बसे लसे खेलनि खुमारी चोज चौंपनि वढारा हें। नेति नेति कहनि चहनि मुसिक्याय भाय विलसे विलास हास सवसुधि आये हैं ॥ भोर पै किशोर चितेंचोर

दोऊ नीठि नीठि उठति लटकि जाति ऐसे छवि छाये हैं। सेज नीदसर मानों आलस उमगि नीर जुगल कमल केलि कौतुक वुडाए हैं ॥७३॥

❀ राग देव गंधार ❀

राजति रसिक बिहारी विहारिन। आलस अंग सुरंग अनूपम कोकिल भांति सिंगारनि ॥ लोचन अरुन छवि पीक कपोलनि तापै विथुरनि वारनि ॥ टूटी माल रसाल विलोकन भूमनि भुकनि संभारनि ॥ उर नख अंक मयंक मनोहर भाव सिंधु विस्तारनि। यह सुख निरखि भरोखनि अलिगन हिय सांचे रसढारनि ॥७४॥

"अथ अष्टपदी । कुरु यदुनंदन चंदन" गेयं ॥७२॥

लाड़िलीजू के वचन लालजूसों। हमारों ज्यों को त्यों शृङ्गार करौ ज़ाते सखी परिहास न करें। एहों रसिक दुंहू मोहन सुंदरि करि सिंगार जे आप मिटाये अधर मधुर करि हरि लीनो दृग अंजन दै ये रस अरसाये। ललित तिलक रचि चित्र कपोलनि श्रम जल दै दै निपटं बहाये वारि सवांरि विचारि मनोहर निजकर परस इत उत विथुराये ॥ नख शिख भूषण वसन विसारे अति चंचल तुम तन लपटाये मति हसिवावो फेर बनाओ जिन कर सखीजननि मन भाये ॥७६॥

रसिक बिहारी सुनि सुखकारी बात अनूपम श्रवननि धारो। खंजन गंजन दृग मन रंजन अंजन देये बहुरे सुधारो ॥ वांधों चिकुर कुसुम मंडित करि हार डारे गहि उरहि सिंगारो। कटि परि छुद्र घंटिका जा विध नाही विघ रचि रंक निवारो ॥ विविधि केलि रस वेलि बढाई तन लपटाई ताहि निहारो ॥ सोकें सें वपु सों अब छूटें अति प्रवीन तुम जतन विचारो ॥ रहे चकित मन

मोहन सोहन वचन प्रीतमा प्रानिनि प्यारो । लता ओट अवलोकति आली यह सुख नैननि होत न न्यारो ।।७७।।

सुन मन मोहन सब विध सोहन तन मन रीझे सुभाव भुलाये । नेति नेति तजि हेत हेत करि लेत लेत रसकी हूँ न अधाए ।। अंचल सिथिल होत ही सकुचित सो अब वसन कहां विसराये ।। सनमुख दीठि न होती कबहूँ अति पगि दृग दृग माझि समाये । ज्यों के त्यों करि रसिक मनोहर सब विद्या तुम पढ़े पढ़ाये ।। याही तै रंग रहतु सब निविचना तरत वही जात लखाए ।।७८।।

(या पद में सिंगार लाल जूने किये फिर लोभ सों मिटायो)

वचन लडैती सुनि हरि नागर विविध भांति शृङ्गार वनावति । अति सुख देंनी वेंनी गह गुह हार हमेलनि उर यह रावति ।। नैननि अंजन चित्र कपोलनि रचि रचि रूचि मुख पान खवावति भूषन भूषन अङ्ग अनूप परसन हित भूगनहि रचावति निरखे निरखि छवि सिंधु किशोरी पिय रस मगन पारनहि पावति सुधि सुधि विसरि रसिक मन भावनि चावनि दवनि फेरि मिटावति ।।७६।।

राग विलावलि

बिहारिनी लाडिली हो लाल हे सकल सुखनि की दानि ।
चितवत चित तोषति योखति तन मन मनसा रससानीं ।।
दरस परस रस हासि परस्पर विचित्र तिहारी वानी ।
धन्य जनम मानत अनुरागी जब उर लागति आनि ।।
विहरत वनरति मांनि निरन्तर निदर काम की कानि ।
विहारिन दास लड़ावति छिन छिन हिलगि हिये की जानि ।।८०।।

राग विभास

अग पहुपी री परन लागी। लाल क्यों न जानदेउ घर अपने।
तुमें कहा सोच घरको यहै ठंग मोहि परे जिय कपने॥
एदइया या ब्रज के गैल गरियारे पर सों हौ नहीं सपने।
आनंद घन उघरे न भ्रम तो देई दवाजपने पुजाये थपने ॥८१॥

मोहन हौं न लगो यहुपीरी।
जब जब में उठि चलों भांव ते तब तब रोकि कहां नैंकुधीरी॥
हौं व्याकुल डर गुरूजन दुरजन तुम निसंक दियें सोरो।
कौन मनोहर भाव भुलाने आवति नहि मति नीरी ॥८२॥

राग देवगिरी

आव निकुंजतें पहुपीरी।
प्रिथे जभांति अरसात रस मसी ललन खवावति वोरी।
सुरत श्रमित अंग अंग सिथिल भये भुज मरी श्याम रसीरी॥
वोठल विपुल विनोद करौं वलि नहिं ललितादिक नारी ॥८३॥

आवत वनतें रेंन विहांए।
आरस भरे रसिक येय प्यारो अंग अंग रंग चढ़ाये॥
घूमति झूमति रस मतवारे तन सों तन लपटाये।
को वरनें निसि चिन्ह माधुरी अति रति देति दिखाये॥
जानि बूझि सहचरि रही पाछे हित इन लाड़लड़ाये।
हिल मिलि केलिकरत कल वहु विधि सुधि भूलति सुधि आए ॥८४॥

आवनि मन भावनि संग प्यारीं।
निसा अंत रतिवंत जगाये सावधान सुकसारी॥
चले कुंज तें निज निज मंदिर सब परिकर सुखकारी।
मारग मोहन सोहन कौतिक वरनत मति गति हारी॥

अटकति चलति ललित भुज ग्रीवा लोचन नींद घुमारी ।
अरझे अंग अंग पर भूषण छबि लखि अलि बलिहारी ॥८४॥
आवति बन तें श्यामा श्याम ।
कुंज बने निसि रंग रग मगे अंग अंग अभिराम ॥
गति अति सिथिल सिथिल पट भूषन भुज ग्रीवा उर कलकल दाम ।
घेरें अलितन वास विवश ह्वै अलिकन कंजनि वारनि वाम ॥
रसिक रसीले दृग अटकीले पीवति छबि नहिं होत विराम ।
को बरनें करि मारग कौतिक जिहि तिहि विधि पहुंचे निज धाम॥८६

—❀—

❀ अब सखिन के परिहास रस उद्गार ❀

॥ राग रामकली ॥

Vrindavan Das
Govind
Vrindavan, M...

मोहन लाल के रस मांती ।
वधू गुपति गोवत कत मोसौं प्रथम नेह सकुचाती ॥
देखि सभांरि पीतपट ऊपर कहा चूनरी राती ।
टूटी लट लटकत मोतीन की नख विधु अंकित छाती ॥
अधर विंव खंडित मख मंडित गंड चलति अरूझाती ।
घूमति नैंन अरूण आलस जुत कुसुम गलित लटपांती ॥
आज रहसि मोहन सब लूटि विविध आपनी थाती ।
जै श्री हित हरिवंस वचन सुनि भाभिन भवन चली मुसक्याती॥८७

रसिक गोपाल सों मिलि आई ।
अहो प्यारी वृषभानु दुलारी कहि सांची में पाई ॥
जगमगात अंग अंग छवीले मन लै लाड़ लड़ाई ।
को पटपीत नील पटको इह सुधि बुधि सब विसराई ॥
अंजन उर रंजन हर लीनो घूमति दृग पधराई ।
पे सब छंद वंद बहु तानत अद्भुत गति रसिकाई ॥

कहत मनोहर भांति बात सुनि श्यामा मृदु मुसिकाई।
परम अनूपम सुख सागर में अली भली विधि न्हाई ॥८८॥

(अब तिन सौं पहले संकेत वद्यौ होते माननी भई। उनकी दसा वर्णन लाल जू की महा मोहनता रूप की वर्णन)

॥ राग विभास ॥

चंदन खौंर अंग किये ललना ए हाथनो लासी सोहत पग पांवरी। ग्रेह तें निकसि अंगना ठाढ़े भये री थोरी थोरी डगनि चाल चलति रीझ मानती भई बावरी ॥ आरस ढ़ीले पाग पेच अटपटे एहो लिग्यें कहूँ कहूँ फूल कहूँ कहूँ तीय अलक गुजावरी। गिरिधारी लाल को वानक देखेंते और कहा कहि आवेरी॥ आली ये तन मन की जै नौछावरी ॥८६॥

आए ज्योंही जोंही देखें त्योंही त्योंही रहे लजाय। तब प्राण राखनि कौं फिरि में ही प्रकृति करीये रिसोंही॥ जो कछु रस गस मो मन मांहीं भई निचौही देखति उनकी दृष्टि लजोंही। रस मसोंही कोऊ न जाने आली यह रस वे जाने कि हों ही॥ मति ललचोंही गति सिथिलोंहीं मूरति मोहन नैंन चुभोंही। हृदें हहरोंही छवि सोंरोंहीं अरभोंही अति रहिगई चाहति सोंहीं ॥९०॥

॥ राग देव गंधार ॥

भलें ही यें आये हो भलें आये मैंरे ग्रहे ललना वलमानें न पलक के करो पांवड़े। पहली सकुच कछू मन में न आनों हों मन बच क्रम की विनती करत हौं॥ सो अब तुम बरुनी नितें जिन हो फुला लकनाबड़े। वेगि चरण कमल नबल धरिये करी ए हो मनचीरे पुतरिन कीजै अलस भांवड़े। तो सुख पावे तन प्रान सहत श्याम सुंदर पीय जिय के जीय की हिय सब जानत इह अहत जियग मगडग न घरो आवड वौवड़े ॥९१॥

॥ राग विभास ॥

न पेटी अखियां की हूं न अघाही ।
रूप स्वरूप सुधा रस पीवत भूल हूं न करें नाही ॥
प्यासी जल वरसत छिन छिन ही और विरह दों दाहीं ।
को जाने विधि रची कौन विध सब अचरज इन मांहीं ॥६२॥

न पेटे कान की हूँ न अघात ।
जुगल स्वरूप सब्द रस निसिदिन पीवत पै तरसात ॥
निपट अटपटी चाह परी ना चैन न छिन अकुलात ।
सब भांतिन दुःख तऊ मनोहर समुझत रसिक सुवात ॥६३॥

रस जागरन रंगे दोऊ भोर ।
करत आरती मंगल प्रिय जन जीवनि राधा नंद किशोर ॥
चहूँदिशि रसिक समाज रग मग्यो लोचन तृषित ज्यों चंद चकोर ।
सबै मनोहर छवि निसि कौतिक बंधे रहैं चित नित यह डोर॥६४

॥ दोहा ॥

और भेद बहु गान के समें समें अनुसार ।
होरी रचना फूल औ फूलनि रास विहार ॥६५॥
रस क्रम पद पद्धति यहै रसिक जीवनी नाम ।
निपट विकट ही पै भई कृपा लाड़िली श्याम ॥६६॥
रसिक सिरोमनि सम्पदा गोड़ेश्वर जग ख्यात ।
कही उक्ति श्री भागवत रस पद्धति जी बात ॥६७॥
ध्यान करों हिय में धरों वस्तु अनूपन सार ।
मिलें सजाती जो कभूं सुनों अर्थ विस्तार ॥६८॥

॥ कवित्त ॥

कैसे उठें प्रात रात रंग रग मगे कुंज दोऊ,
प्रिया पीव एसों ध्यान नहिं आन्यो है ।

कोंन भांति आवनि जभावनि रसीली गति,
निज निज गेह आय दु:ख सुख मान्यो है ॥
कब निसि आवे जिय अति ललिचावे,
न सुहावे कछु खान पान हिय हित सान्यो है ।
रसिक नरेस को न कहूँ संग लेस पायो,
पायो उपदेस ऐपै दे सुन हिं जान्यो है ॥६६।
॥ इति रस क्रम पद्धति रसिक जोवनि नाम संपूर्ण ॥

॥ कवित्त ॥

नीके रसखानि रसखानि कवित्त करों,
यह रसखानि मन आंक रसखानि है ।
जिते रसखानि रसखानि में समाय रहे,
लहे रसखानि भई बातें रसखानि है ॥
देखि रसखानि रसखानि हू निबास कियो,
ना कहिये आइने कु होति रसखानि है ।
ताते रसिखानि रस खानि कौ विलोकिये जू,
मिलें रसखानि जब जानें रसखानि है ॥१००॥

॥ शुभं भवतु ॥

सं० १८१६ मिती कार्तिक वदी १ श्री वृंदाबनमध्ये
लिखतं व्यास आराद राम । व्यास भवानीदास
पठनार्थं । श्री कृष्णाय०

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१. गदाधरभट्ट जी की वाणी	(राधेश्याम गुप्ताजी से प्रकाशित)	||)
२. सूरदास मदनमोहनजी की वाणी	"	|||)
३. माधुरीवाणी	(माधुरीजी कृता)	||=)
४. बल्लभ रसिकजी की वाणी		|=)
५. गीतगोविन्द पद	(श्रीरामरायजीकृत)	|)
६. गीतगोविन्द	(रसजानिवैष्णवदासजी कृत)	|)
७. हरिलीला	(ब्रह्मगोपालजी कृता)	=)
८. श्री चैतन्य चरितामृत	(श्रीसुवलश्यामजी कृत)	४||)
९. वैष्णववन्दना (भक्तनामावली)	(वृन्दाबनदासजीकृता)	=)
१०. विलापकुसुमाञ्जलि	(वृन्दाबनदासजीकृत)	|)-
११. प्रेमभक्तिचन्द्रिका	(वृन्दावनदासजी कृता)	|)
१२. प्रियादासजी की ग्रन्थावली		|=)
१३. गौराङ्गभूषणमञ्जावली	(गौरगनदास कृता)	|)
१४. राधारमणरससागर	(मनोहरजी कृता)	|)
१५. श्रीरामहरिग्रन्थावली	(श्रीरामहरिजी कृता)	|—)
१६. भाषाभागवत (दशम, एकादश, द्वादश)	(श्रीरसजानिवैष्णवदासजी कृत)	१)
१७. श्रीनरोत्तमठाकुर महाशय की प्रार्थना		||)
१८. संप्रदायबोधिनी	(कविवर मनोहरजी कृता)	=)
१९. ब्रजमण्डलदर्शन	(परिक्रमा)	१)

२०. भाषाभागवत (महात्म्य, प्रथम, द्वितीय स्कंध) ||)

२१. कहानीरहसि तथा कुंवरिकेलि (श्रीललितसखीकृत) |)

२२. ब्रह्मसंहितादिग्दर्शिनीटीका की भाषा(श्रीरामकृपाजीकृता)||=)

२३. किशोरीदास जी की वाणी ||=)

२४. गौरनामरसचम्पू (कृष्णदासजीकृता) ||=)

२५. क्षणदागीतिचिंतामणि (मनोहरदासजी) ||)

२६. अष्टयाम (श्रीवृन्दावनचन्द्रदास विरचित) १|)

२७. श्रीचैतन्यभागवत (आदि, अत्यन्तखंड) ५)

२८. स्मरणमंगलभाषा (गुणमंजरीकृता) |)

२९. श्री ब्रजयात्रा—एवं चरनपूर्णानन्द जी ग्रन्थावली |)

३०. श्री रसिक जीवनि (कविवर मनोहरजी द्वारा संकलित) |)

বৃন্দাবন দাস
গোবিন্দ কুণ্ড, বৃন্দাবন - মথুরা (উঃপ্রঃ)
ক্রমাঙ্ক-৫৬৬, 4-6-2018 (কুঃ)

विद्यालय प्रेस, वृन्दाबन ।

श्रीश्रीराधारमणो जयति

श्रीरामशिष्यं कटके सुजन्मं पौगण्डकाले गुरुसान्निधाप्तम् ।
गौरोदयोर्व्यां परियान्तमाशु श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।१

गौराङ्गदासादिभिरुन्मदेन वृन्दावने वासकृतं सहर्षम्।
भावानुरागेण वदन्तमुच्चैः श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।२

गौडीयभक्तै रचिता रसाढ्या उद्दीपिता ग्रन्थवरा हि येन ।
साहित्यरत्नं ब्रजभूषणं तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।३

विज्ञैः समेतं सुमनःसरस्स्थं ग्रन्थानुलेखं परिशोधयन्तम् ।
सद्भक्तिसिद्धान्तनिधिं सनिष्टं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।४

सौम्यं कृपालुं मधुभाषकण्ठं शुक्लाम्बरं क्षीणतनुं नितान्तम् ।
निःसङ्गमानन्दवपुं महान्तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।५

लीलास्मरन्तं सततं जपन्तं देवाग्र उन्मत्तपरं नटन्तम् ।
संकीर्तनामोदमोदं प्रसिद्धं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।६

भक्ताधरोच्छिष्टललातिचित्तं स्नेहाभिमूर्तिं चलनातिधीरम्
भक्तानभक्ताञ्च नमन्तमुत्कं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।७

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गयुक्तं मुग्धं प्रशान्तं नितरां हसन्तम् ।
वैराग्यसिन्धुं करुणैकबन्धुं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।८
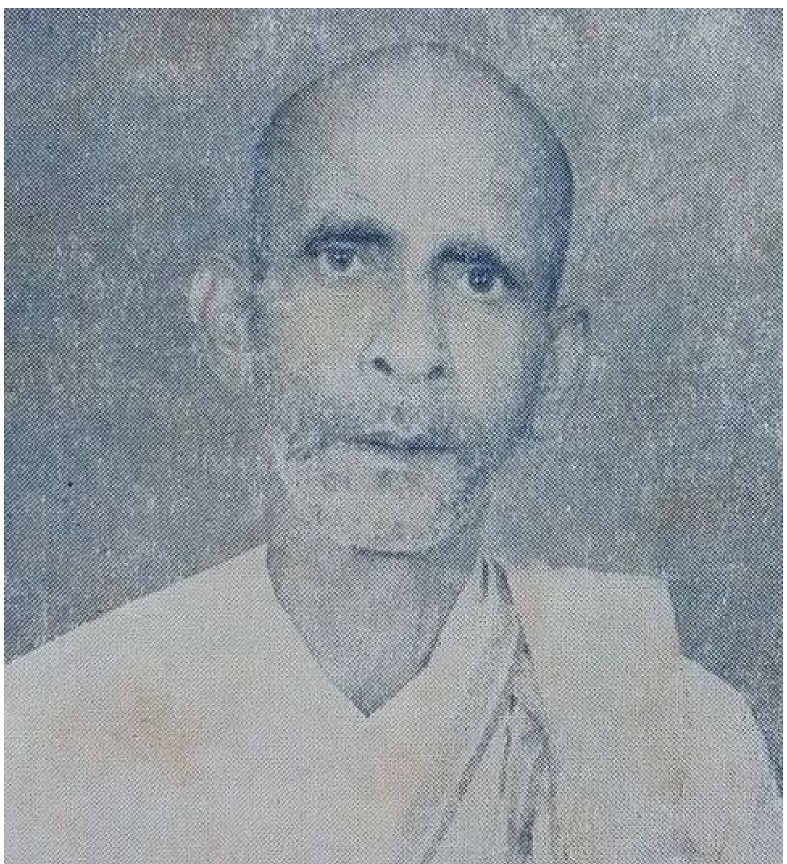
इति श्रीश्रीवृन्दावननिवासिना श्रीश्रीवृन्दावनदासेन विरचितं
श्रीश्रीकृष्णदासाष्टकं सम्पूर्णम्